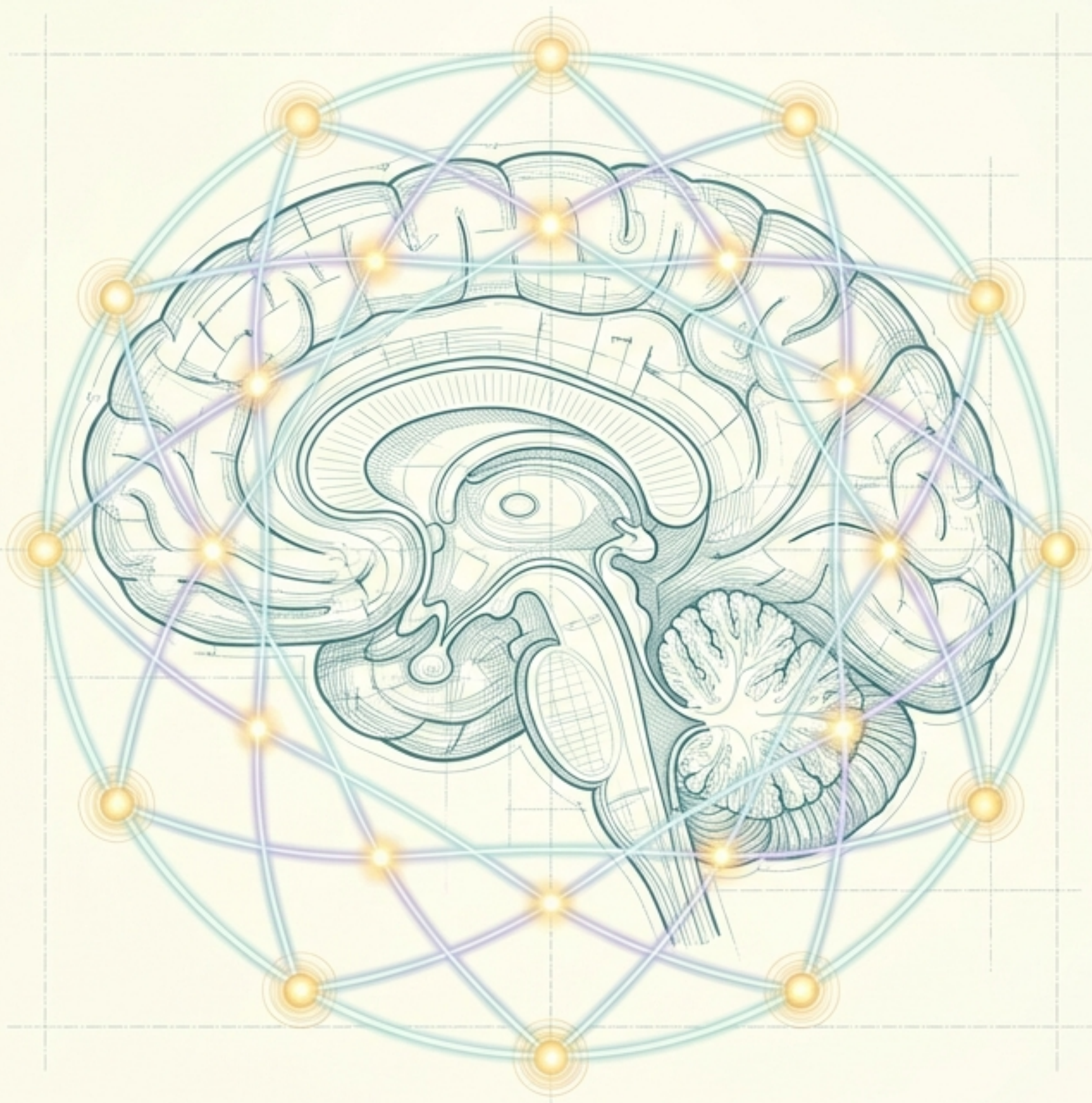


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

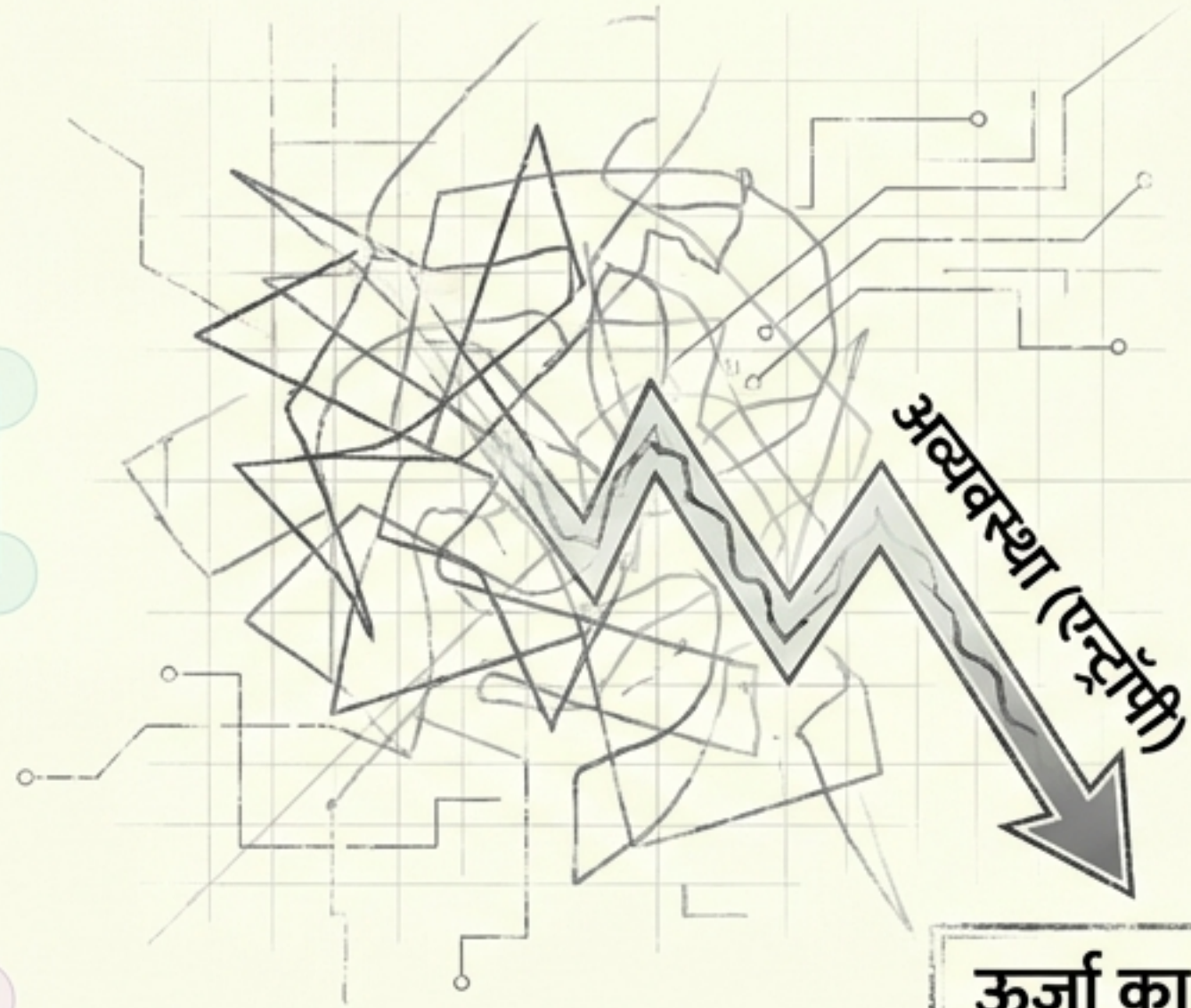
जाग्रत चेतना की वास्तुकला

मानव रूपान्तरण और जीवन साधना का वैज्ञानिक ब्लूप्रिंट



व्यवहार की आधारशिला: पंचशील और मानव ऊर्जा का विज्ञान

प्राकृतिक अवस्था



ऊर्जा का क्षय

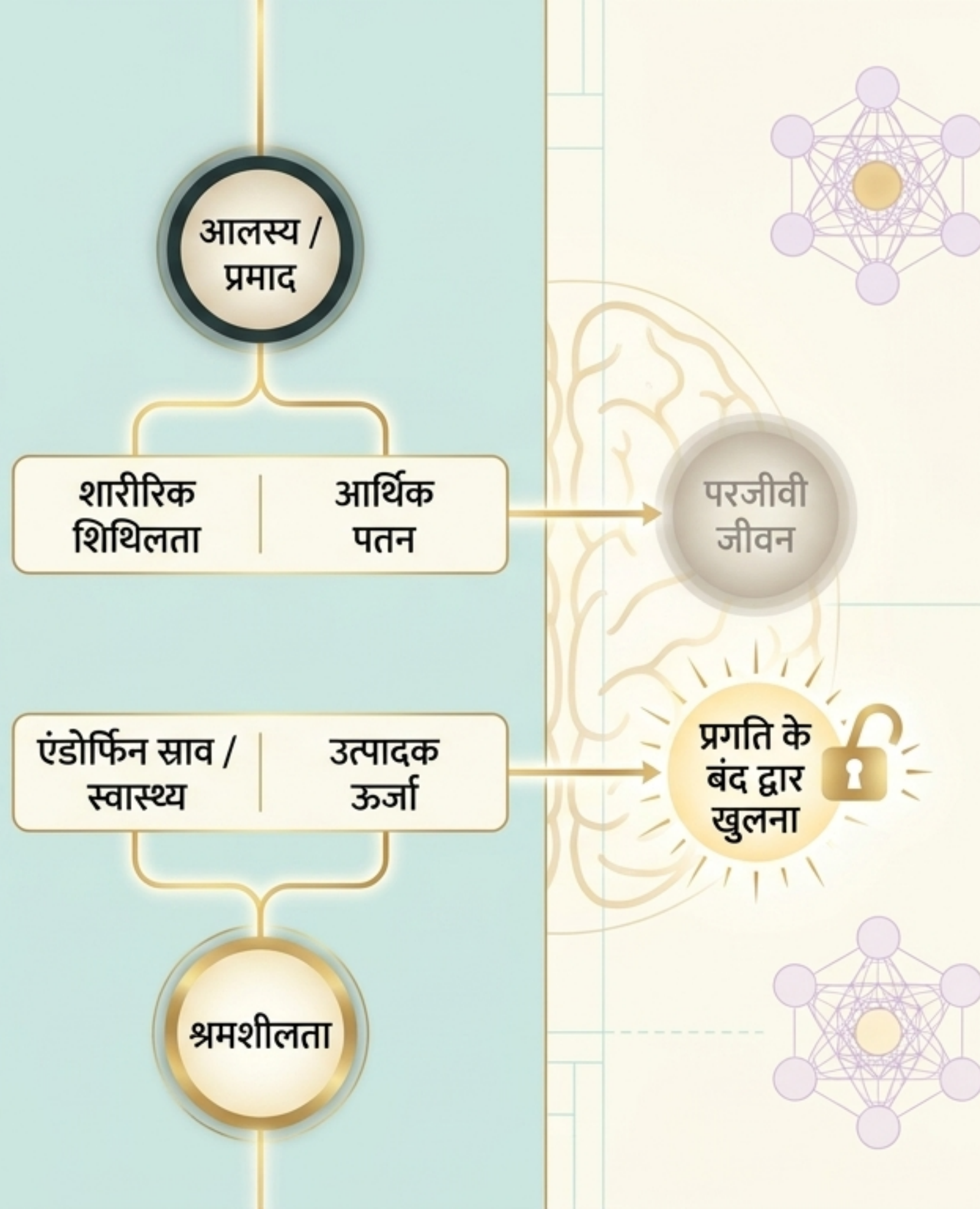
अनुशासित अवस्था



प्राचीन काल के तप अब इन 5 व्यावहारिक आदतों में संकुचित हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

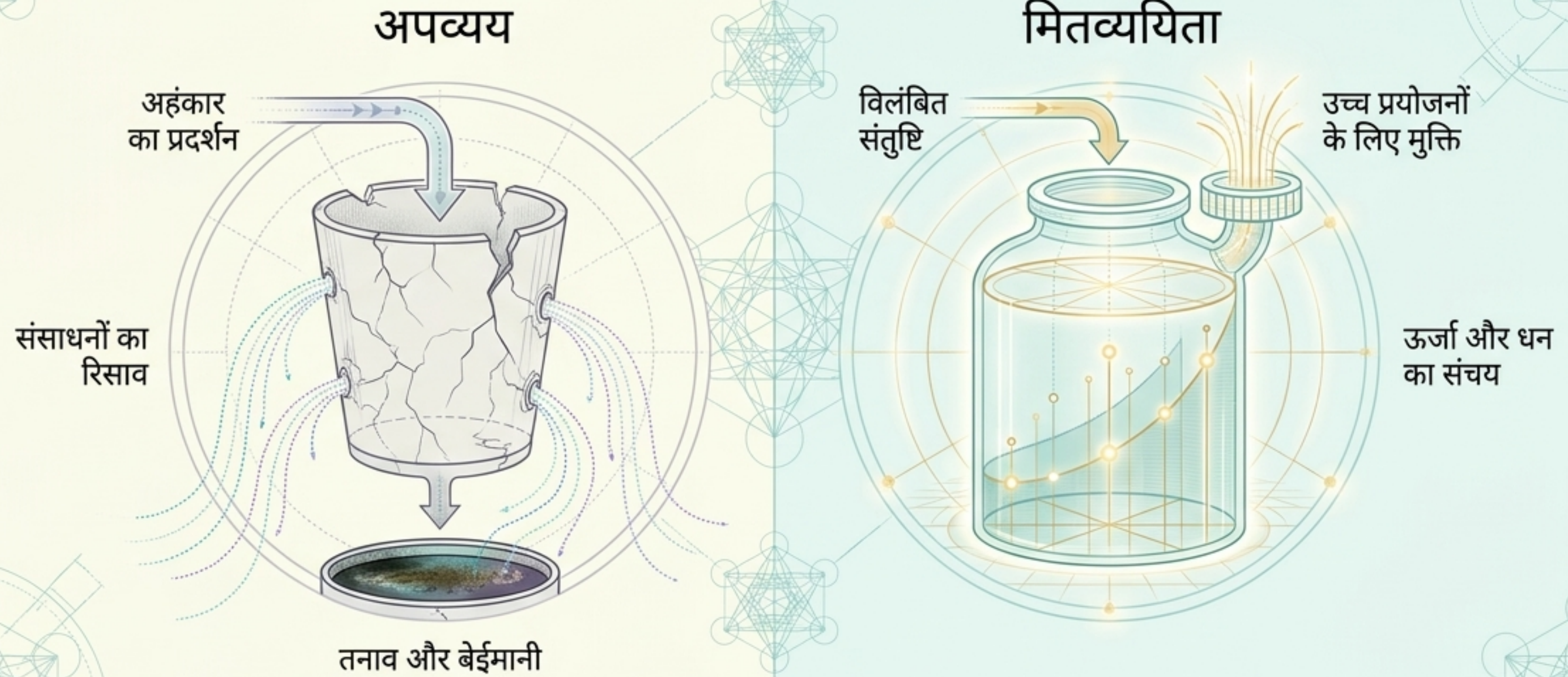
श्रम के बिना न शरीर नीरोग रह सकता है,
न समाज का उत्पादन सम्भव है।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और अप बसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि नेरे ज्ञान शरीर को भेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में भेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सूत्र २: मितव्ययिता - संसाधनों का इष्टतमीकरण

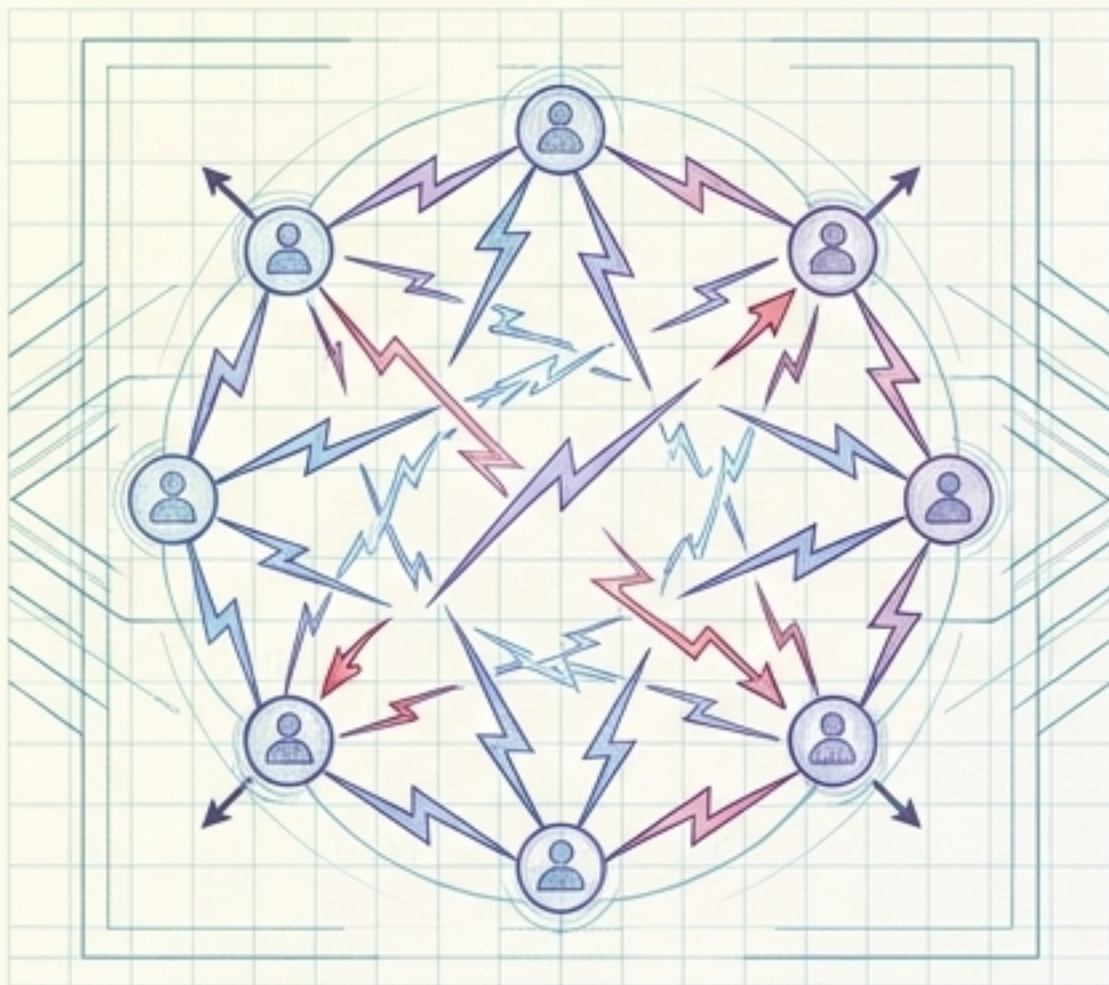


अपव्यय को रोककर ही उदारता के लिए संसाधन बचाये जा सकते हैं।

सूत्र ३: शिष्टता - सामाजिक घर्षण (Friction) में कमी

अशिष्टता + अहंकार = उच्च घर्षण

Network Graph 1 - High Friction



परिणाम: कलह और अलगाव

शालीनता बिना मोल मिलती है, परन्तु उससे सब कुछ खरीदा जा सकता है।

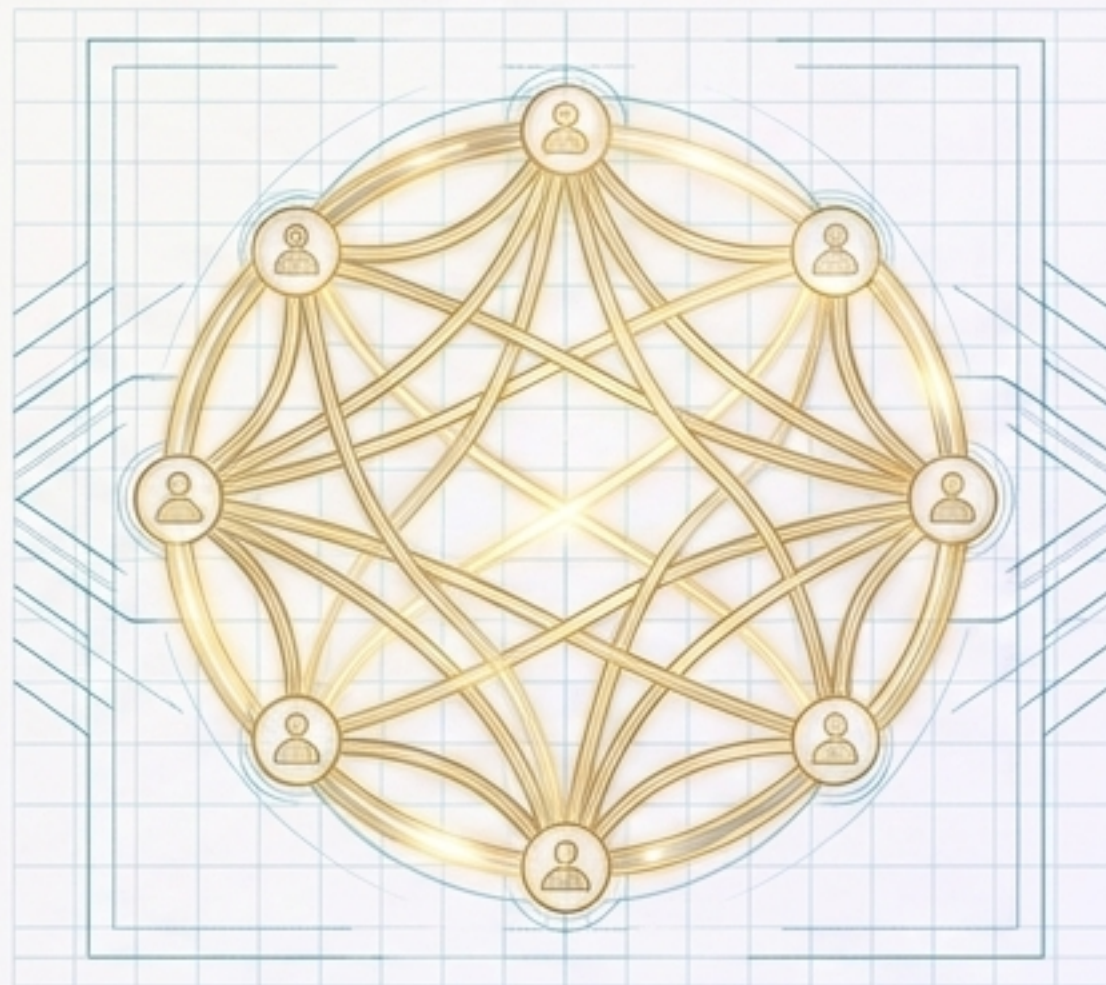
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना है। आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि ओगप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहिये मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिमर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगश्रुति वेदपूति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

विनम्रता + शालीनता = सामाजिक सामंजस्य

Network Graph 2 - Low Friction



परिणाम: सहयोगियों का विस्तार

सूत्र ४: सुव्यवस्था - समय और स्थान का सुनियोजन

अस्त-व्यस्तता

मानसिक थकान

क्षमता का क्षरण

सुव्यवस्था ही सौन्दर्य है;
यह प्रबंधकों और नेताओं
का प्राथमिक गुण है।

सुव्यवस्था

न्यूरल दक्षता

समय
अनुकूलन

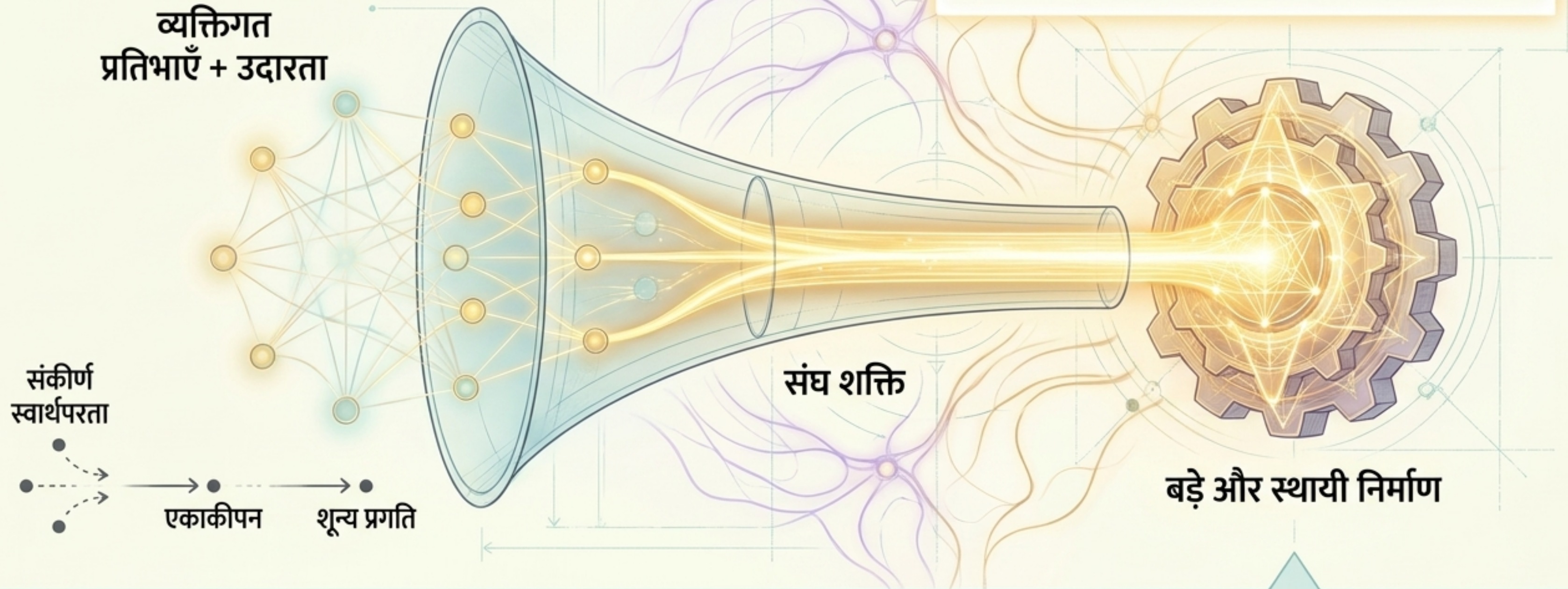
कला-कौशल
का विकास

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

सूत्र ५: सहकारिता - सामूहिक चेतना का जागरण



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

संज्ञानात्मक वास्तुकला: उच्च मानसिकता के चार सूत्र

समझदारी

ईमानदारी

व्यवहार के बाद, मानसिकता का परिष्कार ही लोक-परलोक दोनों को समुन्नत करता है। ये 4 सूत्र आत्मा के चार वेद हैं।

बहादुरी

जिम्मेदारी

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन
के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा — सब
बच्चों से कहियेगा कि मेरे
ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।” —
पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

मानसिक डायग्नोस्टिक मैट्रिक्स (भाग १)

वलन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगरूषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

गुण	डिफ़ॉल्ट स्थिति	वैज्ञानिक लाभ	सामाजिक परिणाम
समझदारी	तात्कालिक आकर्षण / चटोरापन	प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स सक्रियता / इंद्रिय संयम	दूरगामी निर्णय और जीवन सुरक्षा
ईमानदारी	छल-छद्म	संज्ञानात्मक भार में कमी	अटूट सामाजिक विश्वास / प्रामाणिकता

मानसिक डायग्नोस्टिक मैट्रिक्स (भाग २)

गुण	डिफ़ॉल्ट स्थिति	वैज्ञानिक लाभ	सामाजिक परिणाम
जिम्मेदारी	कर्तव्य से पलायन	डोपामाइन/लक्ष्य प्राप्ति	नेतृत्व क्षमता और समाज निष्ठा
बहादुरी	कायरता और भय	एमिग्डाला नियंत्रण	अनीति के खिलाफ संघर्ष / शोषण से मुक्ति

वलन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब वक्तों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगकवि वेदवृत्ति तपोनिष्ठ पन्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गावली परिवार के संस्थापक)

5 पंचशील + 4 मानसिकताएँ = 9 गुणों का यज्ञोपवीत।
यही सौर मंडल के 9 ग्रहों और 9 रत्नों का वास्तविक स्वरूप है।

द्विजत्व: मनोवैज्ञानिक कायाकल्प का विज्ञान

भ्रांति

- चमत्कारिक वरदान की प्रतीक्षा
- बाहरी धन्वन्तरि की मनुहार

वास्तविकता

- 9 गुणों का सचेत अभ्यास
- न्यूरल पाथवे का पुनर्निर्माण
- आकृति नहीं, प्रकृति बदलती है

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सच्चा कायाकल्प पशु-प्रवृत्तियों से ऊपर उठकर मानव से देवता बनने की प्रक्रिया है।

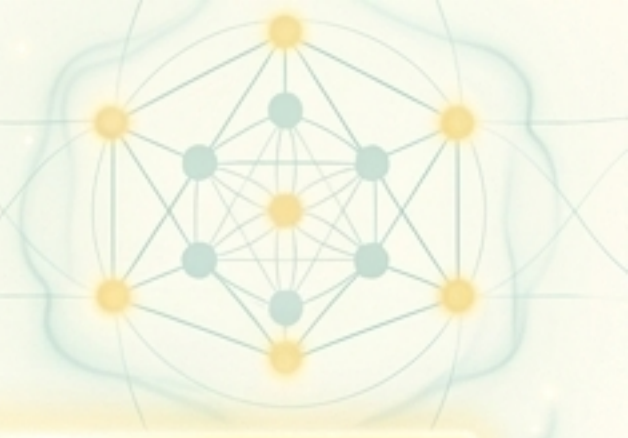
कर्मकाण्ड का मनोविज्ञान: लेनदेन बनाम रूपान्तरण

ईश्वर और उपासना का सत्य

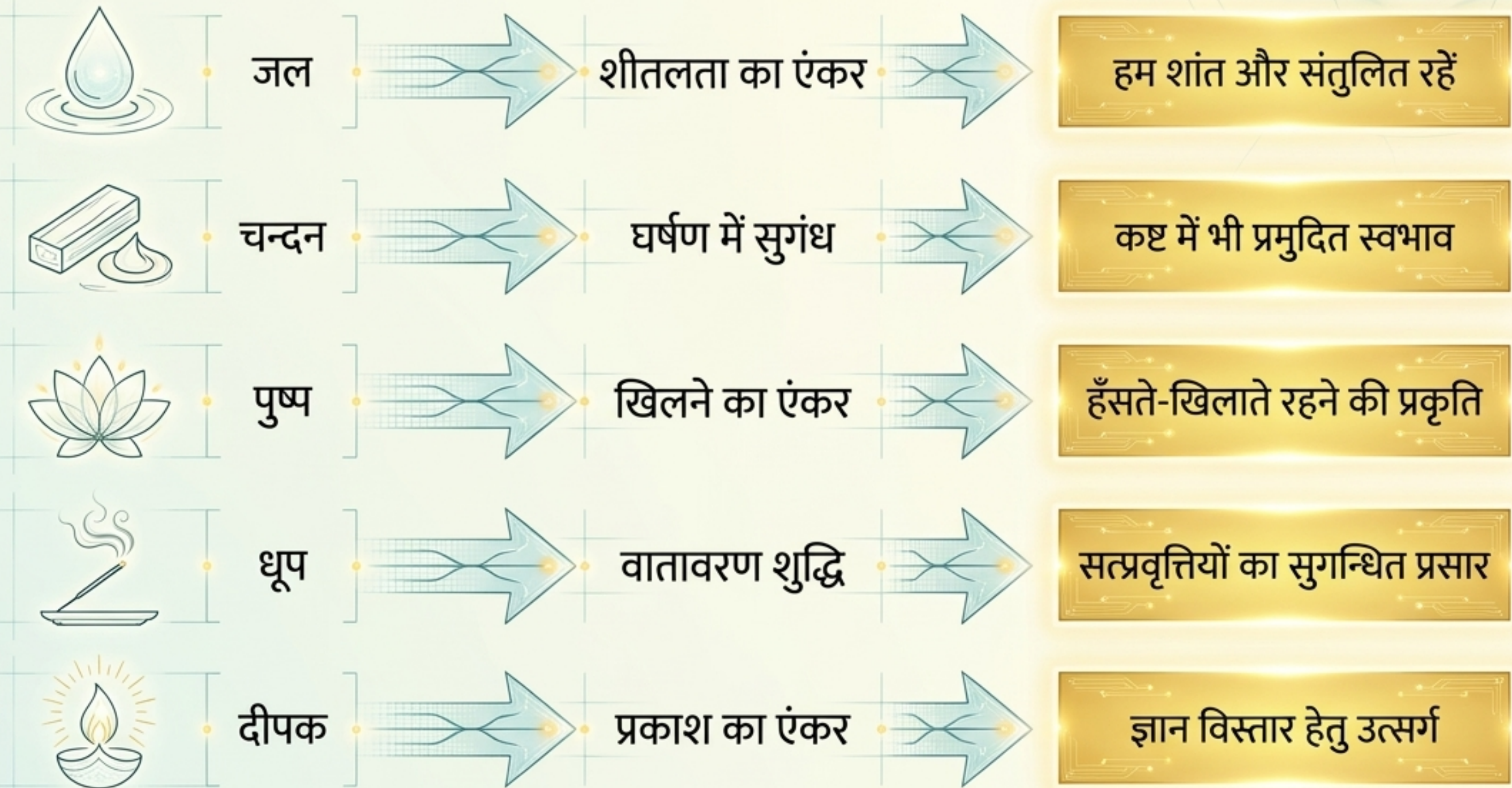
लेन-देन	रूपान्तरण
• उद्देश्य: मांगना और गिड़गिड़ाना	• उद्देश्य: अपनी पात्रता विकसित करना
• दृष्टि: ईश्वर एक रिश्वतखोर अधिकारी है	• दृष्टि: ईश्वर एक दर्पण / ग्रीन लाइट है
• परिणाम: निराशा और बाल-क्रीड़ा	• परिणाम: आत्मा का परमात्मा में विलय - जैसे नाले का नदी में, या ईंधन का अग्नि में

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



प्रतीकोपासना: भौतिक कर्मकाण्ड से मानसिक एंकर तक



वसन्त पंचमी १९९० को वर्नकाण्ड से मानसिक एंकर तक

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-ज ज्ञाश जन-जन के बीच में पहुँचा ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञानधर को मेरे कान्तिधर्मा श्रद्धा सहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगमाञ्जुषि वेदभूति तपोनिष्ठ

— पूज्य गुरुदेव युगमाञ्जुषि वेदभूति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

चेतना का विस्तार: 1 से 125 तक का नेटवर्क

विचार क्रान्ति: 'चल ज्ञान मन्दिर' का निर्माण।

समयदान और अंशदान।

महाकाल का आह्वान:
अपनी मर्जी छोड़कर युग-धर्म
के मार्ग पर चलना।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच
में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे
कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को येरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
गुगकवि वेदभूति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

1 व्यक्ति

5 लोगों का
पंचायतन

25 लोग

125 लोग

आत्मपरिष्कार से शुरू होकर, यह वास्तुकला
संपूर्ण विश्व के नव-जीवन का आधार बनेगी।